शोध-प्रारूप

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य : एक अध्ययन

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्‌यालय, राँची

से पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप

वर्ष 2024

शोध निर्देशक

डॉ० खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्‌यालय, राँची।

शोधार्थी

सत्यनारायण मुण्डा
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
एम०ए० (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
(मुण्डारी)
मारवाड़ी कॉलेज, राँची।

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य : एक अध्ययन

भूमिका :

हमारे देश भारत में झारखण्ड 28वें राज्य के रूप में दिनांक-15.11.2000 ई० को अस्तित्व में आया है। झारखण्ड जो आजादी के बाद बिहार राज्य का हिस्सा था। वर्तमान में बिहार का दक्षिण भाग झारखण्ड कहलाया। झारखण्ड का शाब्दिक अर्थ है "जंगल-झाड़ वाला क्षेत्र" या "वनों की भूमि"। इस प्रदेश में भिन्न-भिन्न प्रकार की पेड़-पौधे, नदी-नाला एवं खान-खनिजों से भरा है। इसलिए इसे भारत का रूर प्रदेश भी कहा जाता है।

संसार में जितनी भी भाषा बोली जाती है, उनमें से सभी भाषाओं का विभिन्न विद्वानों द्वारा अलग-अलग भागों में बांटा गया है। इसी में से मुण्डारी बोली या 'होड़ो जगर' एक भाषा है, जो मुण्डा भाषा परिवार से संबंध है तथा इसका संबंध आस्ट्रिक/आग्नेय भाषा परिवार में रखा गया है। ये मुख्य रूप से पूर्व भारत, बांग्लादेश, नेपाल से आस्ट्रेलिया तक फैली हुई एक भाषा परिवार से है तथा भारत के झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, बंगाल, असम, छत्तीसगढ़ एवं अंडमान-निकोबार द्वीप में बोली जाती है।

मुण्डा का शाब्दिक अर्थ "सिर" होता है। झारखण्ड के संदर्भ में मुण्डा भाषा परिवार का क्षेत्र छोटानागपुर है। झारखण्ड की आबादी में यह तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। इनकी भाषा मुण्डारी है। इनका मुख्य निवास स्थान राँची, खूँटी, सिमडेगा, गुमला, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसांवा, पलामू, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, गिरिडीह, बोकारो, लातेहार एवं संथाल परगना है।

प्रेरणा :-

मेरा जन्म झारखण्ड के मुण्डा गाँव में हुआ और मुण्डा भाषा परिवार में होने के कारण मुण्डारी बोली, संस्कृति, भाषा एवं गीत-संगीत से मुण्डारी से जुड़ाव रहा है तथा एम०ए० मुण्डारी भाषा से पढ़ाई के बाद मुझे लगा कि मुण्डारी भाषा में और अधिक ज्ञान अर्जित किया जाय। चूँकि मुण्डारी भाषा हमारी मातृभाषा है और मुण्डारी भाषा से बहुत लगाव रहा है, किन्तु जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची में मुण्डारी पढ़ने का सुअवसर मिला तो मुण्डारी भाषा साहित्य का गहन अध्ययन करने के क्रम में

इसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने का भी मौका मिला, जिसमें मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य बहुत ही प्रभावित किया। बचपन में गांव में दादा-दादी पहेलियाँ, लोकोक्तियाँ, कहावतें सुनाते थे और हमलोगों का मनोरंजन कराते थे, जिसके कारण बचपन से ही इसकी ओर झुकाव था। प्रकीर्ण साहित्य का अध्ययन करने का मकसद हजारों-हजार सालों एवं पीढ़ी दर पीढ़ी से मौखिक रूप से चली आ रही चीजों को सहेजने की जरूरत है। प्रकीर्ण साहित्य को लोक जनमानस धीरे-धीरे भूल रहे हैं। उसको समाज के प्रति उत्साह, उमंग के साथ समाज में विस्तृत एवं सुगमता उपलब्ध करना।

<u>परिकल्पना</u> :-

किसी विषय पर शोध की चर्चा करने से पहले मन में गहन सोच- विचार उत्पन्न होती है कि शोध कैसा होना चाहिए। जब मैं गाँव से राँची शहर आया, पढ़ने के लिए तो मुझे ऐसे दोस्त बहुत मिला, जिन्हें मुण्डारी साहित्य में प्रकीर्ण साहित्य के बारे में पता नहीं था और मुझसे पूछते थे कि कैसे सीखें, तो मेरे मन में आया कि वर्तमान में मुण्डारी बोली एवं संस्कृति खतरे में है। ऐसी स्थिति को देखकर बहुत ही गहन सोच में डूबा। तभी मुझे ख्याल आया क्यों न ‘‘**मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य : एक अध्ययन**’’ विषय पर पीएच०डी० करने की सोचा, जिसमें मुण्डारी भाषा के विभिन्न विधियों को जन्म दिया है। ये सब पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांरित होती रहती है। इसे अन्य तथ्यों का अध्ययन जरूरी है।

पुरे मनुष्य जाति विभिन्न रंग-चित्रकृति और प्रवृत्ति का प्रतिमूर्ति होता है। किसी चीज को छिपाकर रखना या कम शब्दों में अपना अनुभव को दूसरे तरीके से व्यक्त करना, अपना प्रभाव छोड़ना या दूसरे के सामने स्वयं को ज्यादा बुद्धिमान, ज्ञानी और अनुभवी साबित करने की प्रवृत्ति आदिम प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति की संतुष्टि के लिए मनुष्य अपने भाषा में जो प्रयोग करता है, उसी का परिणाम किसी भाषा का लोकोक्ति, कहावत, मुहावरे, पहेली और मंत्र है। भाषा इस तरह से प्रयोग से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता बढ़ जाती है और भाषा का अनावश्यक विस्तार घट जाता है। साथ ही भाषा में एक प्रवाह आ जाता है। दूसरी ओर लोक मानस के विभिन्न प्रवृत्ति की संतुष्टि होती है।

किसी भाषा का प्रकीर्ण साहित्य उस भाषी लोक के वह समाज के जीवन्तता के प्रतीक है। दूसरी तरह से हम कह सकते हैं कि किसी भाषा का प्रकीर्ण साहित्य जितना समृद्ध होता है, उस समाज का लोक मानस उतना ही सजग, वैचारिक रूप से समृद्ध और जीवन्त माना जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में मुण्डारी भाषा-भाषी समाज के लोक मानस को बहुत

सजग जीवंत प्रयोगधर्मी माना जा सकता है, क्योंकि मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य के रूप में एक धनी भाषा है। जिसके अंतर्गत लोकोक्तियाँ, कहावते, मुहावरे, पहेलियाँ, मंत्र आदि है जो यहाँ की संस्कृति को उजागर करती है। लोक साहित्य के अभिन्न अंग के रूप में प्रकीर्ण साहित्य का विशिष्ट महत्व है। जिससे मुण्डारी भाषी समाज की सांस्कृतिक प्रगाढ़ता दृष्टिगोचर होती है। भारत के आदिवासी समूहों में विशेषकर मुण्डारी भाषा वर्ग की भाषाओं में मुहावरे, कहावते, लोकोक्तियाँ एवं मंत्र का विशिष्ट स्थान है।

मैं डॉ० खातिर हेमरोम के निर्देशन में इस विषय पर शोध कार्य करने का मन बनाया है। प्रकीर्ण साहित्य का अध्ययन करने का मकसद हजारों-हजार सालों एवं पीढ़ी दर पीढ़ी से मौखिक रूप से चली आ रही चीजों को सहेजने की जरूरत है। प्रकीर्ण साहित्य को लोक जनमानस धीरे-धीरे भूल रहे हैं।

<u>शोध का उद्देश्य</u> :-

किसी शोध कार्य प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है :

1. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य का उद्भव और विकास का अध्ययन करना।
2. मुण्डारी भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन करना।
3. मुण्डारी भाषा साहित्य में शोधार्थियों के लिए सूचना संकलन संग्रहण एवं विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त करना।
4. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य का सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन के प्रभाव को देखते हुए उसका सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करना।

<u>समाज पर शोध का प्रभाव</u> :-

1. मुण्डारी भाषी लोक मानस में व्याप्त कहावतें, मुहावरें, पहेलियाँ, मंत्र आदि का संस्कृति पर उसका प्रभाव को दर्शाने में मदद मिलेगा।
2. इससे मुण्डारी भाषा में प्रकीर्ण साहित्य का महत्व बढ़ेगा।
3. मुण्डारी भाषा के शोधार्थियों को प्रकीर्ण साहित्य से संबंधित अन्य पहलुओं पर शोध हेतु प्रोत्साहन मिलेगा।
4. निज भाषा प्रेम एवं अपनी संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा।
5. भाषा-सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि क्षेत्र से संबंधित अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

शोध विधि :-

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने हेतु निम्नांकित शोध विधियों को अपनाया जाएगा।

1. अवलोकन
2. साक्षात्कार
3. वैयक्तिक
4. प्रश्नावली
5. विश्लेषण
6. सर्वेक्षण।

संभावित अध्याय :-

भूमिका

प्रथम अध्याय

मुण्डारी लोक साहित्य का सामान्य परिचय

क. मुण्डारी लोक साहित्य और प्रकीर्ण साहित्य (परिभाषा एवं महत्व)

ख. प्रकीर्ण साहित्य की परिभाषा एवं पृष्ठभूमि

ग. प्रकीर्ण साहित्य की विशेषताएँ एवं महत्व

घ. प्रकीर्ण साहित्य का वर्गीकरण एवं विस्तार
(लोकोक्तियाँ, मुहावरा, पहेलियाँ एवं मंत्र)

द्वितीय अध्याय

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में संस्कृति

क. संस्कृति की परिभाषा, महत्व एवं विशेषताएँ

ख. संस्कृति के व्यापक फलक

ग. प्रकीर्ण साहित्य और संस्कृति का संबंध

घ. प्रकीर्ण साहित्य में सांस्कृतिक बोध के उपकरण

तृतीय अध्याय

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य व्यापक अध्ययन : सामान्य परिचय

क. मुहावरा का अर्थ और उसकी विशेषताएँ

ख. मुण्डारी मुहावरें

ग. कहावतें/लोकोक्ति का सामान्य परिचय, अर्थ और उसकी विशेषताएँ

घ. मुण्डारी कहावतें/लोकोक्ति

ङ. मुण्डारी मुहावरा एवं कहावत/लोकोक्ति में अंतर

चतुर्थ अध्याय

मुण्डारी पहेली और मंत्र : सामान्य परचिय

क. पहेली का सामान्य परिचय, अर्थ और उसकी विशेषताएँ

ख. मुण्डारी पहेलियाँ

ग. लोकमंत्र का सामान्य परिचय, अर्थ और उसकी विशेषताएँ

घ. मुण्डारी लोकमंत्र

ङ. मुण्डारी खेलगीत/बालगीत

पंचम अध्याय

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में लोक संस्कृति परिवेश और व्यवहार के संदर्भ में

क. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य का सामाजिक परिवेश

ख. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य और लोक व्यवहार अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ

ग. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य और लोक जीवन दर्शन

घ. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य और लोक सांस्कृतिक चेतना

षष्ठ अध्याय

मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में लोक संस्कृति के विभिन्न फलक

क. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में आदर्श के तत्व

ख. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में नैतिक मूल्यों की स्थापना

ग. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में ज्ञानवर्धन एवं उपदेशात्मक तत्व

घ. मुण्डारी प्रकीर्ण साहित्य में यथार्थ।

सारांश और निष्कर्ष

<u>परिशिष्ट</u>

1. आधार ग्रंथ की सूची
2. संदर्भ ग्रंथ की सूची
3. पत्र-पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार सूची
5. चित्रावली।

नोट :- प्रस्तावित शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

<u>शोध निर्देशक</u>

डॉ० खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

<u>शोधार्थी</u>

सत्यनारायण मुण्डा
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
एम०ए० (मुण्डारी)
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
(मुण्डारी)
मारवाड़ी कॉलेज, राँची।

<u>आधार ग्रंथ की सूची</u> :-

1. नाग विनोद बढ़ाय, मुण्डारी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन।
2. कंडील सेलेस्टिना, मुण्डारी शिष्ट साहित्य का अध्ययन।
3. मुण्डा डॉ० अजीत, मुण्डा लोक परम्परा का वैज्ञानिक अध्ययन।
4. बड़ाएउद डॉ० मनसिद्ध, मुण्डारी लोक साहित्य का कथानक रूढ़ियाँ।
5. सोय डॉ० विरेन्द्र कुमार, मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की भासिक संरचना।
6. मानकी डॉ० जुरन सिंह, मुण्डा साहित्य में संस्कार : एक अध्ययन।

<u>संदर्भ ग्रंथ की सूची</u> :-

क्रम संख्या	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1.	राय, एस०सी०	मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री	सिटी बार लाईब्रेरी, कलकत्ता	1912
2.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	मुण्डारी पाठ एवं आदि धरम	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
3.	शर्मा, पी०सी०	ए मुण्डा विलेज		
4.	ओड़ेया, मेनस राम	माथुरा कानिः - 5	सत्य भारती, राँची	1984
5.	जे० फादर जॉन, हॉफमैन एस०	इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारी		1930
6.	त्रिगुणायत, जगदीश	मुण्डारी लोक कथाएँ		1968
7.	मुण्डा, भईयाराम	दंड़ा जमाकन होड़ो कहनी को	नॉवेल्टी आर्ट प्रेस, मेन रोड, राँची	2011
8.	बड़ायऊद, डॉ० मनसिद्ध	नवा होड़ो जगर मुंडि	नेशनल प्रिंटर्स, राँची	2005
9.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल, मुण्डा, अमिता, नाग, नलिनी	ए'आ नावा कानिको	आई०डी० पब्लिशिंग, कोकर, राँची	
10.	त्रिगुणायात, जगदीश	बाँसुरी बज रही	गया प्रिंटर्स, गया	1960
11.	मुण्डा, श्री काण्डे	गुड़रम्	मुण्डारी साहित्य संग्रह एवं प्रकाशन समिति, राँची	1980
12.	मुण्डु, डॉ० एम०	कुदुम ओड़ोः सोलको	आई०डी० पब्लिशिंग, कोकर, राँची	1980

13.	मुण्डु, डॉ० एम०	मुण्डारी टुड़को ढारि	काथलिक प्रेस, राँची	
14.	मुण्डु, डॉ० एम०	संक्षिप्त मुण्डारी व्याकरण	काथलिक प्रेस, राँची	1995
15.	त्रिगुणायात, जगदीश	सोसो बोंगा	काथलिक प्रेस, राँची	1979
16.	आर्चर, डब्लू०जी०	मुण्डा दुरङ राँची		1942
17.	ओड़ेय, मेनस राम	सिंङ बोंगा ओड़ोः एटअः एटअः बोंगा को राँची		1968
18.	बड़ाएउद, डॉ० मनसिद्ध	मुण्डा कोअः नुतुम कहानिको ओड़ोः होने कोअः इनुङ् दुरङ को राँची	काथलिक प्रेस, राँची	
19.	बड़ाएउद, डॉ० मनसिद्ध	मुण्डा कोअः सोना		2010
20.	मुण्डा, भइयाराम	दंड़ा जमाकन होड़ो कहानी को राँची (द्वितीय संस्करण)	भइयाराम मुण्डा फाउण्डेशन, राँची	2011
21.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	अनायुम दुरङ, राँची		2010
22.	मुण्डा, मंगल सिंह	दुरंङ को कोरे अद् जना, राँची		2013
23.	तिर्की, सिकरादास	मुण्डारी लोक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य, राँची		2010
24.	बड़ाएउद, डॉ० मनसिद्ध	होड़ो जगर गअः इदि गमुइदि जमा राँची	काथलिक प्रेस, राँची	2011
25.	सोय, डॉ० वीरेन्द्र कुमार	सेड़ा दुवार राँची		2006

26.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	बुदु बाबू और उसकी रचनाएँ प्रतिपाला एवं रामायणपाला	मुण्डारी भाषा साहित्य परिषद	1974
27.	मुण्डा, पो० दुलाय चन्द्र	बम्बारू		1975
28.	मुण्डा, डॉ० रामदयाल	जादुर दुरांङ को हानटिङं-1		
29.	तिर्की, डॉ० सिकरादास	बा चण्डुऊ आन लोअऊ		
30.	ओडेया, बिरसा, मुण्डा, सुकराम	जव सुसुन अकड़ा		

<u>पत्र-पत्रिकाओं की सूची</u> :-

	पत्रिका का नाम	**प्रकाशक/प्रकाशन**
1.	जगर साड़ा	एस०के० बागे
2.	जोहार	स०अ०व०दि० हँस
3.	बिहान पत्रिका	बुण्डू
4.	नितिर सकम	एस०के० बागे
5.	मरसल	निरल एनेम होरो
6.	संगोम	डॉ० विरेन्द्र कुमार सोय
7.	सनङ	सिलास हेमरोम
8.	आदिवासी	बिहार सरकार, राँची
9.	डहर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ
10.	सरना सकम	भइयाराम मुण्डा
11.	सम्पड़ातिङ	स०अ०व०दि० हँस
12.	सेंड़ा सेतेङ	नवीन मुण्डू
13.	एयोन	राँची
14.	जवा डालि	त्रिमासिक पत्रिका, राँची
15.	बाः गहनालङ	राँची